व्यक्ति गौण संघ मुज़्य रहे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 9 अगस्त, 2010

आचार्य महाश्रमण ने चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी वाचन कराते हुए कहा कि धर्मसंघ के प्रत्येक सदस्य के सामने व्यक्ति गौण, संघ मुज़्य रहना चाहिए। उन्होंने आत्म निष्ठ, संघ निष्ठा, आज्ञा निष्ठा, आचार निष्ठा और मर्यादा निष्ठा को विकसित करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि संघ के सदस्यों में शंका पैदा हो ऐसी बातचीत से बचना चाहिए। दूसरों की कमियों को आचार्य के सामने प्रस्तुत कर दें, दूसरों के बीच प्रसारित न करें। उन्होंने आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मौलिक मर्यादाओं का पुनरावर्तन कराते हुए कहा कि जिस तरह से एक राजा का कर्तव्य होता है कि वह सज्जन पुरुषों की रक्षा करें, दूर्जनों को दण्डित करें और प्रजा का भरण पोषण करें वैसे ही एक आचार्य का दायित्व है वह अपने शिष्य-शिष्याओं की सार-संभाल करें। शिष्य समुदाय का भी कर्तव्य होतां है कि वह संघ और संघपति के प्रति समर्पित एवं विनीत भाव से संघ की श्रीवृद्धि में अपने आपको नियोजित करें। इस अवसर पर नव दीक्षित साध्वियों ने लेख पत्र का वाचन किया। आचार्य महाश्रमण ने साध्वियों के प्रथम बार लेख पत्र वाचन पर पांच-पांच कल्याणक बक्शीष किये।

जीवन विज्ञान व्यक्तित्वच विकास कार्यशाला शुरू

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में जीवन विज्ञान अकादमी जैन विश्व भारती लाडनूं द्वारा 9 से 13 अगस्त तक आयोजित एवं सरदारशहर के पोकरमल चिमनमल बूचा द्वारा प्रायोजित जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास शिविर का शुभारंभ सोमवार को तेरापंथ भवन में हुआ। इस शिविर में जीवन विज्ञान के द्वारा शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास का प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। इस मौके पर आचार्य महाश्रमण ने संभागियों को गहराई में जाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि गहराई होने से ही गंभीरता आती है और निर्मलता का विकास होता है। जो साधना की गहराई में जाता है वह बहुत कुछ प्राप्त कर लेता है। जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने कहा कि जीवन विज्ञान जीने का व्यवस्थित ज्ञान है, उन्होंने कार्यशाला के उद्देश्यों पर भी प्रकाश डाला। डॉ. ललित किशोर ने कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)